

21-नवयुग का मत्स्यावतार

अध्याय 1: तुच्छ को महान बनाने वाली

प्रश्न 1: ब्रह्मा जी ने चुल्लू में मिले छोटे से कीड़े का क्या किया और उसका परिणाम क्या हुआ?

उत्तर: ब्रह्मा जी ने प्रातःकाल संध्या-वंदन के समय चुल्लू में आए एक छोटे से कीड़े को दयावश अपने जल भरे कमंडल में छोड़ दिया। कुछ ही समय में वह कीड़ा इतना विशाल हो गया कि उसने पहले कमंडल, फिर तालाब और अंत में पूरे समुद्र को घेर लिया। उसका यह तीव्र विस्तार देखकर ब्रह्मा जी भी आश्चर्यचकित रह गए।

प्रश्न 2: महामत्स्य ने ब्रह्मा जी को अपने असाधारण विस्तार का क्या कारण बताया?

उत्तर: जब ब्रह्मा जी ने मछली के अभूतपूर्व विस्तार का रहस्य पूछा, तो महामत्स्य ने बताया कि वे केवल एक जीवधारी दिखते हैं, परन्तु वास्तव में परब्रह्म हैं। उन्होंने समझाया कि जब भी इस संसार को सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है, तो वे अपनी सत्ता को नियोजित करते हैं और इसी से अवतार का प्रयोजन सिद्ध होता है।

प्रश्न 3: महामत्स्य ने ब्रह्मा जी को क्या वचन दिया और अदृश्य सहायता का क्या रहस्य समझाया?

उत्तर: महामत्स्य ने ब्रह्मा जी को वचन दिया कि जब भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदलने की ज़रूरत पड़ेगी, वे अदृश्य रूप में उनकी सहायता के लिए आते रहेंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि श्रेय भले ही ब्रह्मा जी को मिलेगा, पर प्रेरणा और क्षमता उन्हीं की (दैवी सत्ता की) होगी, क्योंकि असाधारण कार्य केवल ब्राह्मी शक्ति से ही संभव होते हैं।

अध्याय 2: तीव्र विस्तार चेतना का स्वभाव

प्रश्न 1: लेखक ने चेतना के तीव्र विस्तार को समझाने के लिए विकासवाद का क्या उदाहरण दिया है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, विकासवाद मानता है कि सृष्टि के आरम्भ में केवल "अमीबा" जैसा एककोशीय जीव था। जब उस पर दिव्य प्रेरणा उतरी, तो वह संकल्पों से भर गया और उसी से विकसित होकर सृष्टि में अनगिनत भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवधारी बन गए। यह चमत्कार अमीबा का नहीं, बल्कि उस पर उतरे दिव्य सत्ता के प्रवाह का था।

प्रश्न 2: स्रष्टा के कर्तृत्व और मनुष्य की क्षमता में क्या अंतर है?

उत्तर: मनुष्य अपने बलबूते पर एक बीज से कुछ पेड़ ही उगा सकता है, लेकिन स्रष्टा के लिए एक बीज से पूरे वन प्रदेश का निर्माण कर देना संभव है। मनुष्य बादलों को बरसाने या ऋतुओं को बदलने जैसे कार्य नहीं कर सकता, जबकि दिव्य सत्ता "एकोऽहम् बहुस्याम" (मैं एक हूँ, अनेक हो जाऊँ) के संकल्प मात्र से पूरी प्रकृति का निर्माण और संचालन करती है।

अध्याय 3: उसी धारा में प्रस्तुत एक उदाहरण

प्रश्न 1: लेखक ने वर्तमान समय के "मत्स्यावतार" का क्या अर्थ बताया है?

उत्तर: लेखक ने वर्तमान समय के "मत्स्यावतार" का अर्थ युग परिवर्तन की सुनियोजित प्रक्रिया से बताया है। इसके अंतर्गत दोहरे कार्य होने हैं - पहला, समाज में व्याप्त अनौचित्य (टूटे खंडहरों) की सफाई करना और दूसरा, देव-संस्कृति के अनुरूप एक नई और भव्य संरचना (भव्य भवन) का निर्माण करना।

प्रश्न 2: दैवी शक्ति पर विश्वास करना क्यों आवश्यक है? महाभारत और राम-राज्य का उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर: युग परिवर्तन जैसे विशाल कार्य मनुष्य की सीमित शक्ति से परे हैं। दैवी शक्ति पर विश्वास इसलिए आवश्यक है क्योंकि उसी से असंभव भी संभव होता है। जैसे मुट्ठी भर रीछ-वानरों द्वारा राम-राज्य की स्थापना या पाँच पांडवों द्वारा कौरवों की विशाल सेना को हराना, ये कार्य केवल दैवी सहायता से ही संभव हो सके, मानवीय शक्ति से नहीं।

प्रश्न 3: गाँधीजी के असहयोग आंदोलन की सफलता के पीछे लेखक ने किस शक्ति को कारण माना है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, ब्रिटिश साम्राज्य, जिसके राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, उसे मुट्ठी भर सत्याग्रहियों द्वारा भारत छोड़ने पर विवश कर देना केवल मानवीय पुरुषार्थ से संभव नहीं था। इस आश्चर्यजनक सफलता के पीछे मानवीय प्रयासों के साथ-साथ दिव्य सत्ता की वह शक्ति भी काम कर रही थी जो प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल देती है।

अध्याय 4: अदृश्य चेतना द्वारा-संचालन

प्रश्न 1: शांतिकुंज के सूत्र-संचालक युग परिवर्तन जैसे बड़े अभियान का नेतृत्व किस आधार पर कर रहे हैं?

उत्तर: शांतिकुंज और उसके सूत्र-संचालक अपनी सीमित क्षमता और साधनों से परिचित हैं, फिर भी वे युग परिवर्तन का नेतृत्व कर रहे हैं। इसका आधार उनका वह दृढ़ विश्वास है जो कई प्रयोगों और परीक्षणों के बाद परिपक्व हुआ है। वे मानते हैं कि इस पूरे प्रयास के पीछे एक अदृश्य दैवी सत्ता काम कर रही है।

प्रश्न 2: अखण्ड ज्योति पत्रिका और युग साहित्य के विस्तार को असाधारण क्यों माना गया है?

उत्तर: अखण्ड ज्योति पत्रिका का लाखों में छपना और उसका करोड़ों विचारशीलों तक पहुँचना एक असाधारण उपलब्धि है। इसी तरह, लगभग तीन हजार छोटी-बड़ी पुस्तकों का लिखा जाना और उनका कई भाषाओं में अनुवाद होना, जो विद्वानों की बड़ी मंडली के लिए भी कठिन होता, वह सामान्य साधनों से पूरा हो गया। यह अदृश्य चेतना के सहयोग को दर्शाता है।

प्रश्न 3: लेखक ने मिशन की कौन-सी उपलब्धियाँ गिनाई हैं जो केवल मानवीय पुरुषार्थ से संभव नहीं लगतीं?

उत्तर: लेखक ने कई उपलब्धियाँ गिनाई हैं, जैसे - देश भर में ५००० से अधिक प्रज्ञापीठों का निर्माण, लाखों लोगों को जोड़ने वाले युगसंधि महापुरश्चरण, विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के लिए ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना, और सत्प्रवृत्ति संवर्धन तथा दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के अनेक कार्यक्रम। ये सब कार्य किसी व्यक्ति विशेष के पुरुषार्थ से संभव नहीं हैं।

अध्याय 5: बड़े प्रयोजन के लिए बड़े कदम

प्रश्न 1: मत्स्यावतार का प्रमुख उद्देश्य क्या था और आज के प्रज्ञावतार आंदोलन से उसका क्या संबंध है?

उत्तर: मत्स्यावतार का एकमात्र उद्देश्य श्रेष्ठता का इतना विस्तार करना था कि संसार का कोई भी कोना उसके प्रभाव से बाहर न रहे। आज के प्रज्ञावतार आंदोलन (युग चेतना) की आकांक्षा भी विस्तार ही है। इसका लक्ष्य भी सज्जनता और श्रेष्ठता को इतना सुविस्तृत करना है कि धरती पर सतयुग जैसा वातावरण बन सके।

प्रश्न 2: "चुल्लू भर पानी में उत्पन्न हुई मछली" की तुलना किससे की गई है और क्यों?

उत्तर: "चुल्लू भर पानी में उत्पन्न हुई मछली" की तुलना अखण्ड ज्योति पत्रिका से की गई है। जैसे वह छोटी सी मछली बढ़कर पूरे संसार में छा गई, वैसे ही अखण्ड ज्योति पत्रिका भी एक छोटे से प्रयास के रूप में शुरू हुई और आज उसने अपने पाठकों का एक विशाल और सुसंस्कृत परिवार बना लिया है, जिसकी गरिमा वट वृक्ष की तरह निरंतर बढ़ती जा रही है।

अध्याय 6: नए लक्ष्य—नए उद्घोष

प्रश्न 1: "२१ वीं सदी उज्ज्वल भविष्य" का नारा कहाँ से उठा और इसका आधार क्या है?

उत्तर: "२१ वीं सदी उज्ज्वल भविष्य" का नारा अखण्ड ज्योति परिकर से उठा और पूरे विश्व में गूँज उठा। इसका आधार यह विश्वास है कि सृजन की ऊर्जा इस परिकर के माध्यम से काम कर रही है, जो अपने साथ जुड़े लोगों को नए संसार के निर्माण के लिए प्रेरित कर रही है। यह कोई साधारण दावा नहीं, बल्कि एक आवेशग्रस्त केंद्र से उभरा उद्घोष है।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार, नया संसार बसाने के लिए सृजन-शिल्पियों की संख्या कितनी होनी चाहिए और क्यों?

उत्तर: लेखक का मानना है कि संसार का कायाकल्प करने के लिए एक करोड़ लोगों का समुदाय भी बहुत छोटा है। एक नया संसार बसाने के लिए कम से कम उतने सृजन-शिल्पी होने चाहिए जितने कि दुनिया भर में सैनिक हैं (लगभग एक करोड़)। क्योंकि जिन्हें विनाश नहीं, सृजन करना हो, उनकी संख्या और क्षमता और भी अधिक होनी चाहिए।

अध्याय 7: समय की माँग के अनुरूप पुरुषार्थ

प्रश्न 1: लेखक ने "एक से पाँच, पाँच से पच्चीस" की प्रक्रिया का क्या लक्ष्य बताया है?

उत्तर: लेखक ने अखण्ड ज्योति के पाठकों से "एक से पाँच, पाँच से पच्चीस" की गुणन प्रक्रिया अपनाने का आग्रह किया है। इसका लक्ष्य मिशन का पाँच गुना विस्तार करना है। हर सदस्य को चार नए सदस्य बनाने चाहिए ताकि पाँच सदस्यों का एक प्रज्ञा मंडल बन सके। इससे विकास की गति पाँच गुनी बढ़ जाएगी और युग परिवर्तन का लक्ष्य जल्दी प्राप्त हो सकेगा।

प्रश्न 2: अनुपाठकों से अब क्या नई अपेक्षा की जा रही है?

उत्तर: जो अनुपाठक अब तक दूसरों से पत्रिका मांगकर पढ़ते थे, उनसे अब बचपन की तरह सहायता पर निर्भर न रहकर तरुणों जैसी जिम्मेदारी अपनाने की अपेक्षा की जा रही है। उन्हें स्वयं पूर्ण सदस्य बनना चाहिए और अपने-अपने पाँच अनुपाठक बनाकर "पाँच से पच्चीस" वाले विस्तार क्रम को पूरा करने में सहयोग देना चाहिए।

अध्याय 8: समझदारी शंका में नहीं—सहयोग में है

प्रश्न 1: अखण्ड ज्योति पत्रिका के आर्थिक ढाँचे के बारे में क्या स्पष्ट किया गया है?

उत्तर: यह स्पष्ट किया गया है कि अखण्ड ज्योति का मूल्य केवल कागज, छपाई और डाक खर्च जितना ही है; इसमें किसी का पारिश्रमिक नहीं जोड़ा जाता। इसका उद्देश्य लाभ कमाना नहीं है, जैसा कि ईसाई मिशन या गीता प्रेस जैसे प्रकाशनों का होता है। यह एक व्यावसायिक उपक्रम नहीं है, इसलिए इस पर संदेह नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 2: संगठन को जीवंत और घनिष्ठ बनाए रखने के लिए कौन-से उपाय सुझाए गए हैं?

उत्तर: संगठन में घनिष्ठता और सक्रियता बनाए रखने के लिए साप्ताहिक सत्संग, हर सदस्य का जन्मदिन मनाने और आदर्शवादी कार्यों को अपनाने जैसे उपाय सुझाए गए हैं। जन्मदिन पर छोटा दीपयज्ञ, गायत्री पाठ और बुरी आदतों को छोड़कर अच्छी आदतों को अपनाने का संकल्प लिया जा सकता है। इससे संगठन में एकरसता नहीं आएगी और रचनात्मक कार्य चलते रहेंगे।

अध्याय 9: वह जिसकी उपेक्षा नहीं ही करें

प्रश्न 1: आत्मा और परमात्मा के मिलन की तुलना "एक और एक ग्यारह" से क्यों की गई है?

उत्तर: सामान्य तौर पर दो लोग मिलकर "एक और एक दो" होते हैं, लेकिन जब जीव (आत्मा) और ब्रह्म (परमात्मा) की दो इकाइयां मिलती हैं, तो उनकी शक्ति ग्यारह जैसी हो जाती है। इसका अर्थ है कि जब साधारण व्यक्ति भी दैवी सत्ता से जुड़ जाता है, तो उसकी क्षमता कई गुना बढ़ जाती है और वह देवमानव जैसी भूमिका निभाने में समर्थ हो जाता है।

प्रश्न 2: असली भगवान को पाने के लिए व्यक्ति को क्या करना पड़ता है?

उत्तर: खिलौने वाले भगवान की पूजा सरल है, पर असली भगवान को पाने के लिए साहस और समर्पण की आवश्यकता होती है। इसके लिए व्यक्ति को पैसे और वासना पर केंद्रित जीवनशैली से ऊपर उठना पड़ता है। अपने अंदर उत्कृष्टता और उदारता जैसे गुणों को विकसित करना पड़ता है ताकि वह दैवी चेतना को धारण करने के योग्य बन सके।

अध्याय 10: ईश चेतना से जुड़ें

प्रश्न 1: ईश्वर का सबसे निकटवर्ती स्थान कहाँ है और उसे कैसे पाया जा सकता है?

उत्तर: ईश्वर का सबसे निकट और सही स्थान व्यक्ति का अपना अंतःकरण है। उसे बाहर देवालयों या तीर्थों में खोजने से केवल उसकी झलक मिल सकती है। वास्तव में उसे पाने के लिए कस्तूरी मृग की तरह भटकने के बजाय अपने अंतःकरण को ही टटोलना चाहिए, क्योंकि ईश्वर वहीं निवास करता है।

प्रश्न 2: जब आत्मा परमात्मा से मिलती है तो व्यक्ति में क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर: जब आत्मा परमात्मा से जुड़ती है, तो व्यक्ति में अद्भुत परिवर्तन आते हैं। उसे ईश्वर से "जागो और जगाओ, उठो और उठाओ" जैसे दुहरे आदेश मिलने लगते हैं और वह उन्हें पूरा किए बिना चैन से नहीं रह पाता। उसका दृष्टिकोण और क्रियाकलाप पूरी तरह बदल जाता है, जैसे पारस को छूकर लोहा सोना बन जाता है।

अध्याय 11: थोड़ा ही सही, नियमित करें

प्रश्न 1: "ज्ञानरथ" या "चल प्रज्ञा मंदिर" की अवधारणा क्या है और यह अचल मंदिरों से बेहतर क्यों है?

उत्तर: ज्ञानरथ चार पहियों वाला एक चलता-फिरता पुस्तकालय है जिसमें युग साहित्य भरा होता है। यह अचल मंदिरों से बेहतर है क्योंकि यह घर-घर और गली-गली जाकर लोगों तक ज्ञान पहुंचा सकता है। इसके निर्माण और संचालन में खर्च बहुत कम है और कोई झंझट भी नहीं है। इसकी उपयोगिता अचल देवालयों से कई गुना अधिक है।

प्रश्न 2: ज्ञानरथ के संचालन में आए नए बदलाव क्या हैं?

उत्तर: पहले ज्ञानरथों का संचालन मुख्यतः पुस्तक-विक्रय के उद्देश्य से होता था, जिससे चलाने वालों को संकोच होता था। अब इस प्रचलन को बदलकर इसे विशुद्ध चल-पुस्तकालय बना दिया गया है। अब पुस्तकें मुफ्त में पढ़ने के लिए दी जाती हैं। यह बदलाव इसे भगवान का रथ घुमाने और पुण्य-लाभ कराने जैसा गौरवशाली कार्य बनाता है।

अध्याय 12: प्राण-चेतना प्रखर बनाए रखें

प्रश्न 1: लेखक ने शांतिकुंज के सत्रों में भाग लेने की तुलना "बैटरी चार्ज करने" से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने इसकी तुलना बैटरी चार्ज करने से की है क्योंकि जैसे बैटरी को बार-बार चार्ज करने की ज़रूरत होती है, वैसे ही मनुष्य की प्राण-चेतना को भी प्रखर बनाए रखने के लिए बार-बार आध्यात्मिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। शांतिकुंज के सत्र प्रज्ञा-परिजनों को वही ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान करते हैं ताकि वे अपने लक्ष्य के लिए निरंतर सक्रिय रह सकें।

प्रश्न 2: नवयुग के अवतरण का प्रधान लक्षण क्या है और इसे कैसे संभव बनाया जा सकता है?

उत्तर: नवयुग के अवतरण का प्रधान लक्षण सज्जनों और सत्प्रवृत्तियों का विस्तार है। संसार की समस्याएं दुर्जनों की दुर्बुद्धि से पैदा हुई हैं, जिनका समाधान केवल संयमशील और उदार लोग ही अपने विस्तार और पुरुषार्थ से कर सकते हैं। इसे संभव बनाने के लिए हम सबको गोवर्धन उठाने वाले ग्वाल-बालों की तरह साहस के साथ जुटना चाहिए।